किसी भी प्रकार की माला को सिद्ध करने की विधी

इस प्रसंग में मैं आपको किसी भी प्रकार की माला की प्राण प्रतिष्ठा व उसको सिद्ध करने की विधी के बारे में बताउंगा। इसके साथ ही आप किसी माला से मन्त्र जाप करते हैं तो कुछ समय के बाद वह माला भी स्वंय सिद्ध व जाग्रत हो जाती है व जब किसी व्यक्ति पर ओपरी पराई व भूत–प्रेत के आसार नज़र आते हैं तो यदि आप वह अपनी जाप–माला उसके गले में डाल देते हैं तो वह व्यक्ति (भूत–प्रेत) न केवल चिल्लाने या नाचने ही लगेगा बल्कि अपने बारे में सब कुछ बताएगा भी। माला को सिद्ध करने के कई तरीके हो सकते हैं। परन्तु यहाँ मैं आपको कुछ आसान व सुगम तरीकों के बारें में ही बताउंगा।

यह अघोर समाज की विधी है। जो कि अघोरियों द्वारा माला सिद्ध करने के लिए प्रयुक्त की जाती है। सर्वप्रथम सोमवार के दिन ब्रह्ममुहूर्त में आप पंचामृत से संबंधित सामग्री लें। जिसमें दूध, दही, शहद, घी और शक्कर होते हैं। दूध, दही व घी गाय के हों तो अत्युत्तम है। एक लकड़ी के बाजोट पर लाल कपड़ा बिछाकर उस पर पुष्पों को स्थापित करें और पुष्पों पर माला को स्थापित करें। फिर अपनी रिंग फिंगर द्वारा दूध से माला के हर मनके पर तिलक लगाएँ। फिर दही, शहद, घी और अन्त में शक्कर लगाएँ। तत्पश्चात् पंचामृत तैयार करके माला को उसमें प्रवेश करा दें। अन्त में माला को गंगाजल से स्नान कराएँ और किसी भी शिवमन्दिर में जाकर शिवलिंग से सटाकर वह माला समर्पित कर दें और भगवान शिव का स्मरण करें आप शिव मन्त्र का जाप भी कर सकते हैं। जब तक 11 या 21 जन शिवपूजन ना कर लें। इस प्रकार से यह माला सिद्ध हो जाती है और आप इसे घर पर लाकर धूप–दीप दिखाकर गले में धारण कर सकते हैं तथा समय पर मन्त्र जाप के लिए प्रयोग कर सकते हैं।

दूसरा उपायः यह है कि आप माला को सुबह के वक्त ब्रह्ममुहूर्त में गाय के देसी घी में डाल दें। फिर गंगा जल से धोकर उपरोक्त अनुसार करें और घर आकर धूप–दीप दिखाकर गले में धारण करें।

तीसरा उपायः गुरू गोरखनाथ की पंचोपचार से पूजा करें। गाय का दूध, दही, घी लेकर गोरक्षगायत्री मन्त्र **(ॐ श्री सत नमो आदेश। गुरूजी को आदेश, ॐ गुरू जी, ॐकार शिवरूपी, संखिआवे साधरूपी मध्याणी हंसरूपी हंस परमहंस दो अक्षर गुरूशिव गोरक्ष काया गायत्री)** का जाप करते हुए माला को स्नान कराएं। फिर गंगाजल से धोकर एक कांसे की थाली में स्थापित करें और धूप, दीप व नैवेद्य अर्पण करते हुए पूजा करें। इसके बाद माला को **सत् का नाती धर्म का पूत कालकण्ठ मारभया अवधूत, अम्बर बरसे धरित्री पूरे, पान फूल गउ माता चरे, सूरजमुख सूखे, अगनमुख जले, तेजस भंती, तूमसभंती, ते राजा प्रजा महन्ती, भगवती जाप पूर्ण हुआ। नाथ जी गुरू जी को आदेश** मन्त्र से भस्म स्नान कराएं। फिर इसे माला को गंगा जल से धो लें। फिर गाय के घी में सिन्दूर मिलाकर माला पर लेप लगादें। अब माला के प्रत्येक दाने पर निम्न मन्त्र का जाप करें। **ॐ श्री सत नमो आदेश। गुरूजी को आदेश, ॐ गुरू जी, ॐकार शिवरूपी, संखिआणे साधरूपी मध्याणे, हंसरूपी हंस, परमहंस, दो अक्षर गुरूशिव गोरक्ष काया गायत्री, ॐ ब्रह्मा सोम शक्ति शून्य माता अभिगित पिता अभेद पंथ निरंजन गोत्र विहंगम जाती अनन्त शाखा, सूक्षम भेदी, आत्म ज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी ॐ ह्रीं गो गोरक्षनाथ विघ्नाए शून्य पुत्राय धीमही तन्नो गोरक्ष निरंजन प्रचोदयात् तन्तु का बीज, कमल का फूल, सब गायत्रियों का यही मूल, इतनी गोरक्ष गायत्री, गंगा गोदावरी त्र्यंबकेश्वर क्षेत्र, कैलाशगिरी पर्वत, अनुपान शिला गा दी बैठकर, गुरू गोरक्षनाथ जी ने नवनाथ, चौरासी सिद्धों को सुनाया। नाथ जी, गुरू जी को आदेश, आदेश, आदेश।** जप के बाद माला को अपने सिर से लगाकर भगवान शिव से प्रार्थना करें कि यह माला मेरे लिए सभी सिद्धियों में सहायक हो। फिर इस माला को लाल रंग की गोमुखी में संभाल कर पवित्र और सुरक्षित स्थान में रख दें। इसका प्रदर्शन ना करें। यथासंभव सब की नज़र से बचा कर रखें।

उपरोक्त विधी से आप कभी भी रूण्डमाला को सिद्ध करने की कोशिश नहीं करेंगे। क्योंकि अघोरपंथ में रूण्डमाला पीढी दर पीढी गुरूओं या गुरूभाई से प्राप्त होती है और स्वंय सिद्ध होती है। इसे सिद्ध नहीं किया जाता। क्योंकि इस माला के द्वारा पहले ही उपरोक्त महानुभाव सिद्धो द्वारा साधनाएं व सिद्धियां की जा चुकी होती हैं। इसे धारण करने के बाद एक अलग ही अनुभूती का अनुभव होता है। जब आप इस माला को धारण करेंगे तो आपको लगेगा कि कोई आपसे इस माला को खींच रहा है। क्योंकि इस प्रकार की माला की अपनी शक्ति जाग्रत हो चुकी होती है और यह स्वंय ही भगवान या अलौकिक शक्तियों की तरफ आकृषित होती है।

अब के लिए बस इतना ही, आप माला संस्कार कीजिए और सही ढंग से कीजिये। जीवन में लाभ प्राप्त कीजिए।

मेरे गुरू जी का आशीर्वाद सदा–सर्वदा, नियमित आपको प्राप्त हो।